14

संप्रेषण

आश्रय एवं भोजन की तरह संप्रेषण भी जीवित रहने का एक महत्वपूर्ण साधन है। हमें केवल अपने आसपास देखने पर ही संप्रेषण के अनेको माध्यम मिल जाते है। संप्रेषण माध्यमों, पुस्तकों तथा लोगों के द्वारा हम मनोरंजन, सूचना, ज्ञान, राजनीतिक स्थिति तथा नयी फिल्मों आदि की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। शब्दों, प्रतीकों, ध्वनि, संगीत एवं हाव–भाव आदि के द्वारा हम सब सूचना का आदान–प्रदान करते हैं। इस पाठ के अन्तर्गत आप संप्रेषण के प्रकार और प्रयोग तथा संप्रेषण को अपने दैनिक जीवन में कैसे अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है, तथा व्यक्ति एवं समाज पर जनसंप्रेषण माध्यमों के प्रभाव आदि के बारे में जानेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- संप्रेषण प्रक्रिया के घटकों का वर्णन कर सकेंगे;
- संप्रेषण को किस तरह अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है बता सकेंगे;
- भारतीय सन्दर्भ में अमौखिक संप्रेषण के अर्थ को समझ सकंगे; और
- जन संप्रेषण माध्यमों की भूमिका एवं प्रभाव को समझ सकेंगे।

14.1 संप्रेषण का अर्थ

संप्रेषण लोगों तथा पर्यावरण के साथ अन्तःक्रिया की प्रक्रिया है। जब हम अन्य लोगों से बातचीत करते हैं तो सूचनाओं, विचारों एवं अभिवृत्तियों को संप्रेषित करने के लिए भाषा का प्रयोग करते हैं। जब आपको पता चलता है कि आपका मित्र बीमार है, तब आप उसके स्वास्थ्य के बारे में पूछते है और उसके कुशलक्षेम के प्रति अपनी चिन्ता दिखाते हैं। उसी तरह जब आप किसी दुकान पर कमीज खरीदने जाते हैं, वहां का दुकानदार अपने विचार प्रस्तुत करता है कि कौन–सा रंग आप पर सबसे अच्छा लगेगा।

इस प्रकार संप्रेषण लोगों के मध्य होने वाली एक ऐसी व्यक्तिगत प्रक्रिया है, जिससे हमारे व्यवहार में बदलाव आता है। साथ ही साथ संप्रेषण के माध्यमों से हम अपने विचारों, भावनाओं,

शब्दों तथा क्रियाओं के माध्यम से प्रकट करते हैं। संप्रेषण एक बहुत महत्वपूर्ण माध्यम है जिससें अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कराते हुए निर्णय लेने की प्रकिया को सरल बना कर लोगों को नियंत्रित तथा प्रोत्साहित किया जा सकता है।

14.2 संप्रेषण के तत्त्व

संप्रेषण के मूल तत्त्व इस प्रकार हैं:–

i. **संप्रेषण द्विपक्षीय प्रकिया है:** इसमें भेजने वाला और प्राप्तकर्त्ता दोनों शामिल होते हैं। जब आप अपने पिता से बात करते है, तब संप्रेषण व्यक्तिगत स्तर पर होता है। जब अध्यापक छात्रों के एक समूह से बात करता है, तो वहाँ संप्रेषण समूह स्तर पर होता है।

ii. **उसमें एक संदेश होता है:** सूचना हमेशा किसी संदेश, विचार, भावना, मार्गदर्शन या धारणा के रूप में होनी चाहिए।

iii. **समझ में समानता:** संप्रेषण तभी संभव है जब भेजने वाले एवं प्राप्तकर्त्ता में समझ की समानता हो। समानता का आधार संस्कृति, भाषा, तथा वातावरण हो सकते हैं। शब्द, पदबंध, मुहावरे, चेष्टायें तथा कहावतें भी संप्रेषण के लिए समान आधार प्रदान करते हैं।

iv. **दूसरे लोगों के व्यवहार में बदलाव लाना:** जो सूचना प्राप्तकर्त्ता तक भेजी जाती है, वह कहीं न कहीं उसके व्यवहार में कुछ न कुछ परिवर्तन लाती है। उदाहरण के रूप में, जैसे ही आपको पता चलता है कि बिल्डिंग में आग लग गयी है, उसी समय तुरन्त आप और लोगों के साथ वहां से भाग खड़े होते हैं।

v. **सूचना देने की विधि:** सूचना शब्दों, चेष्टाओं, अभिव्यक्ति आदि द्वारा प्रदान की जाती है।

पाठगत प्रश्न 14.1 और 14.2

1. इनमें से कौन सा कथन सही नहीं है:–

   क. संप्रेषण एक निरंतर प्रकिया है।

   ख. हम शब्दों के द्वारा भी संप्रेषण कर सकते है।

   ग. हम शरीरिक चेष्टाओं के द्वारा संप्रेषण नहीं कर सकते।

   घ. हम स्वर–शैली व शारीरिक मुद्राओं द्वारा संप्रेषण नहीं कर सकते।

2. संप्रेषण के महत्वपूर्ण तत्त्वों का वर्णन कीजिए।

14.3 संप्रेषण के प्रकार

संप्रेषण को मुख्य रुप से दो भागों में बांटा जा सकता है:–

1. मौखिक संचार
2. अमौखिक संचार

मौखिक संप्रेषण: जब दो या दो से अधिक लोगों के बीच शब्दों का प्रयोग बातचीत के लिये किया जाए, तब उसे मौखिक संप्रेषण कहते हैं। यह लिखित व मौखिक दोनों रूप में हो सकता है। मौखिक संप्रेषण हमें लोगों के बीच तर्कपूर्ण बातचीत के साथ–साथ जानकारी तथा दिशा भी प्रदान करता है। यह हमारे जीवन की मूलभूत जरुरत है। शोधकर्त्ताओं ने यह पाया है कि लोग सामान्यत: एक दिन के 10 से 11 घंटे मौखिक संप्रेषण में लगाते हैं, जिसमें पढ़ना, बोलना, लिखना तथा सुनना आता है। मौखिक संप्रेषण के कुछ सामान्य रूप बातचीत, भाषण, पत्र, समाचार–पत्र, पत्रिकाएँ, फोन पर होने वाली बातचीत आदि हैं।

अमौखिक संप्रेषण: यहां ध्यान देना बहुत आवश्यक है कि अमौखिक संप्रेषण या हाव–भाव, पूरे संप्रेषण का 70 प्रतिशत भाग होता है, जबकि शब्द केवल 10 प्रतिशत । इसलिए मानवीय संप्रेषण के लिए अमौखिक संप्रेषण बहुत महत्वपूर्ण है। शारीरिक चेष्टांए, चेहरे के हाव भाव, शारीरिक मुद्राएँ, नेत्र सम्पर्क, आसन, शारीरिक उन्मुखता, दूरियाँ आदि कुछ अमौखिक संप्रेषण के रूप हैं। अमौखिक संप्रेषण निम्नलिखित मदद करते हैं:–

- मौखिक संप्रेषण के तत्त्वों से हटकर प्रभाव बनाना;
- जो कहा गया उसे दृढ़तर करना;
- हमारी भावनाओं तथा अन्तरवैयक्तिक मनोवृत्ति को प्रकट करना;
- शक्ति, स्नेह, सम्मान, प्रभुता को प्रकट करने में सहायक;
- दूसरे के साथ होने वाली बातचीत को व्यवस्थित व नियंत्रित करना, और
- आत्म–प्रस्तुतिकरण में सहायक।

अमौखिक संप्रेषण के विभिन्न मार्ग हैं। यहाँ यह ध्यान रखना जरुरी है, कि अमौखिक संप्रेषण पर संस्कृति का प्रभाव होता है, इसलिए उसे संस्कृति से जोड़ कर समझना जरुरी है। हाव–भाव, शारीरिक गतिविधियों से तथा नेत्र सम्पर्क आँख की गतिविधियों से सम्बन्धित हैं।

सन्निकटता (प्रोक्सिमिक्स) में सामाजिक दूरियों का प्रयोग होता है। अनुमान किया जाता है कि विभिन्न सन्दर्भों में आन्तरिक अग्रलिखित प्रतिमान बना रहता है। दूरी 0–18 इंच, अनौपचारिक दूरी 18 इंच–4 फुट, सामाजिक दूरी 4 फुट– 12 फुट और सार्वजानिक दूरी 12 फुट से अधिक। संप्रेषण का दूसरा भाग हैप्टिक्स अर्थात स्पर्श संप्रेषण का एक अन्य मार्ग है जो संस्कृति का प्रकार्य है। सामान्यत: उत्तरी अमरीकन और उत्तरी यूरोपियन कम स्पर्श करते हैं, किन्तु एशियाई भूमध्य सागरीय और मध्य पूर्वी संस्कृतियों में अधिक सामाजिक स्पर्श होता है।

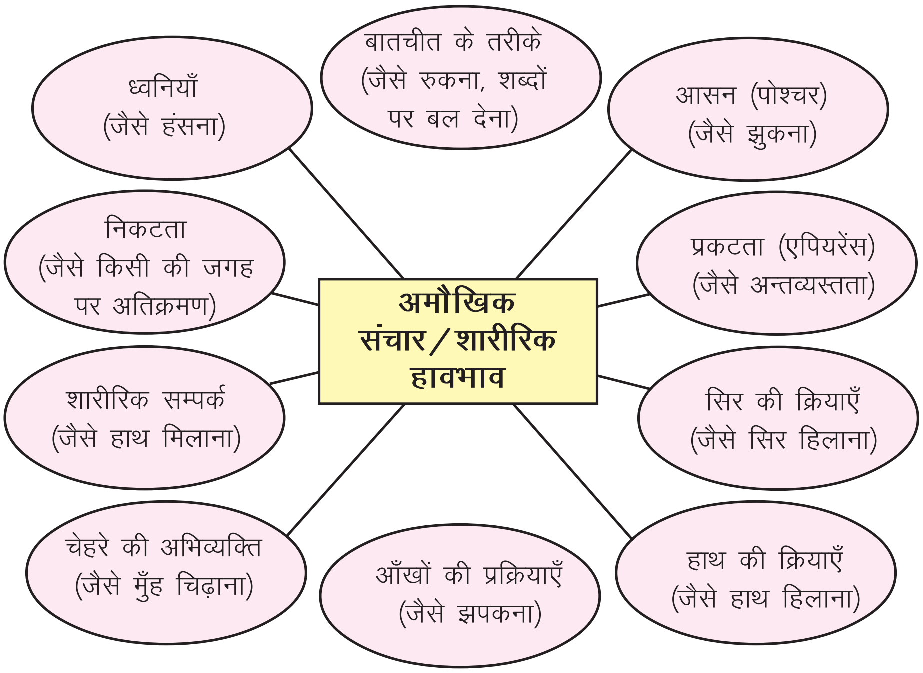

चित्र 14.1

क्या आप जानते हैं?

आंखों से सम्पर्कः–

- आखों का सीधा सम्पर्क विश्वास को प्रकट करता है।
- नीचे की ओर देखना, आदर–सम्मान, ध्यान से सुनना तथा दोष भावना को दर्शाता है।
- एक भौंह को ऊपर की ओर करना सन्देह का परिचायक है।
- दोनो भौंहों को ऊपर करना आदर की भावना को व्यक्त करता है।

आसनः

- सीधे खड़ा होना, किन्तु कठोर नहीं, और आगे की तरफ हल्का सा झुकाव हो तो वह स्वागत करने वाले तथा दोस्ताना रिश्ते को झलकाता है।

चेहरे के हाव–भाव–

- मुस्कुराहट, प्रसन्नता, मित्रता, स्नेह, पसन्द तथा स्वीकार्यता आदि का सबसे अधिक शक्तिशाली संकेत है।

पाठगत प्रश्न 14.3

रिक्त स्थान भरियेः–

1. पढ़ना, बोलना, लिखना और सुनना................................. के उदाहरण हैं।
2. शारीरिक चेष्टाएँ, आँखों से सम्पर्क, चेहरे के हाव–भाव, शारीरिक भंगिमांए और दूरी .... संप्रेषण करने के ढंग है।
3. अमौखिक संप्रेषण के चार साधन..................................., ..., ...,.......................है।
4. हैप्टिक्स........................ संस्कृति के कार्य.को उल्लेखित करता है।

क्रियाकलाप 1

संप्रेषण का खेल : सुनना गतिशील

सक्रिय सुनना संप्रेषण का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। इस खेल को सक्रिय सुनने के कुछ संकेतों के रूप में सीखिए, अपनी संप्रेषण शैली को समझिए, एक सक्रिय श्रोता बनिए और उपयुक्त प्रतिपुष्टि दीजिए।

1. 4–6 लोगो का समूह बनाइये। प्रत्येक व्यक्ति को एक–एक नम्बर दीजिए।
2. हर व्यक्ति एक पर्ची पर एक वाक्य लिखे।
3. एक–एक करके हर व्यक्ति एक पर्ची उठाए और उस पर लिखा वाक्य पढ़े।
4. अब पहले नंबर से लेकर अन्तिम नंबर तक हरेक व्यक्ति अपना–अपना वाक्य अपने साथ खड़े व्यक्ति के कान में कहे। ऐसा करके सन्देश वापिस उस व्यक्ति तक पहुँच जाएगा। अब वह व्यक्ति उस वाक्य को सबके सामने जोर से बोले।
5. अब ध्यान दें : क्या सन्देश अब भी पहले जैसा ही है? या बदल गया है। क्या बदलाव आया है।

इस गतिविधि से यह पता चलता है कि मौखिक संप्रेषण सन्देश को अन्तिम व्यक्ति तक पहुंचने तक बदल जाता है और अन्तिम व्यक्ति तक पहुँचते–पहुँचते वह विकृत हो जाता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि हर व्यक्ति की संप्रेषण करने की अपनी शैली है तथा हर व्यक्ति अलग तरह से सन्देश की व्याख्या करता है।

14.4 प्रभावी संप्रेषण

अभी आपने पढ़ा कि मौखिक तथा अमौखिक संप्रेषण हमारे जीवन में कैसे महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। यह आवश्यक है कि शिक्षा, व्यावसायिक क्षेत्र की उन्नति के साथ–साथ अपने अन्तःवैयक्ति सम्बन्धों को अच्छा बनाने के लिए हम दूसरों से प्रभावी संप्रेषण करना चाहिए। कई बार हम आंशिक या पूरी तरह गलतफहमी के शिकार हो जाते हैं। इन दोनों ही स्थितियों में संप्रेषण नहीं हो पाता। इसलिए ऐसी कुछ जरुरी बातें हमें अपने मस्तिष्क में रखनी चाहिए जो हमारे संप्रेषण को प्रभावी बनाएँ।

प्रभावी संप्रेषण के बारे में पढ़ने से पहले हमें प्रभावी संप्रेषण में होने वाली रुकावटों को समझ लेना चाहिए। अधिकतर यह होता है कि सन्देश को तोड़–मोड़ कर प्रस्तुत किया जाता है, उदाहरण के रूप में कुछ लोग अपने मालिक को खुश करने के लिए, तथ्यों को बदल देते हैं। यह भी होता है कि लोगों के अपने प्रत्यक्षीकरण चुनावी होते हैं। उनका देखना–सुनना उनकी आवश्यकताओं, अभिप्रेरणा, अनुभव और वैयक्तिक विशेषता पर निर्भर करता है। सन्देश का कूटानुवाद करते समय लोग अपनी रुचियों और प्रत्याशाओं को प्रक्षेपित कर सकते हैं। लोगों में सन्देश ग्रहण करने की सीमित क्षमता होती है। ऐसे में जब सन्देश अधिक होते हैं तो सूचना का भार हो जाता है। तब लोग सूचना का या तो चुनाव करते हैं या अनदेखा करते हैं या उसे भूल जाते है। साथ ही साथ, जब हम भावुक होते हैं, जैसे उदास, क्रुद्ध या बहुत उत्तेजित तब हम कुछ सूचनाओं को छोड़ देते हैं। अन्ततः यह कहा जा सकता है कि शब्द प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग–अलग अर्थ रखता है। भाषा का प्रयोग उम्र, लिंग तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से प्रभावित होता है।

14.5 प्रभावी संप्रेषण की विशेषताएं

प्रभावी संप्रेषण की मुख्य विशेषतायें इस प्रकार हैं–

1. **सन्दर्भ का समान ढांचाः** सन्देश भेजने वाला व ग्रहण करने वाला समान स्तर की समझ पर बातचीत करे। जब कोई माँ अपने बच्चे से बात करती है, वह बच्चे की शब्दावली का उपयोग करती है। जैसे शैतान बच्चे से झिड़कने का स्वर, अगर बीमार हो तो चिंता व्यक्त करने वाली शैली। लेकिन जब वह अपनी बहन से बात कर रही हो तो वह सन्दर्भ के अनुकूल कई अलग शब्दों, पदबंधो व शैली का प्रयोग करेगी।

2. **समान रुचिः** संप्रेषण की विषयवस्तु भेजने वाले व ग्रहण करने वाले दोनों की पारस्परिक रुचि का होना जरुरी है। एक किसान के लिए शेयर बाजार की ख़बर में रुचि नहीं हो सकती क्योंकि उसका सम्बन्ध तो बीजों की गुणवत्ता या मौसम के बदलने से खेती पर पड़ने वाले प्रभाव से है।

3. **समान भाषाः** मौखिक संप्रेषण का सबसे शक्तिशाली माध्यम भाषा है। एक जैसी भाषा प्रभावी संप्रेषण को निश्चित करती है क्योंकि इससे शब्दों, पदबंधों, मुहावरों व लोकोक्तियों को गलत समझने की सम्भावना कम होती है।

4. **समान वातावरणः** एक ही पृष्ठभूमि के लोग बिना किसी समस्या के सन्देश समझ लेते हैं। इस प्रकार एक जैसी नागरिकता, आर्थिक स्तर, संस्कृति, सामाजिक रुचि, आयुवर्ग एवं व्यवसाय इसके कुछ उदाहरण हैं। क्या आप एक जैसे मुद्दों की एक सूची बना सकते हैं? आपने यह भी देखा होगा कि किस प्रकार अपने ही धर्म, स्तर व शहर के लोगों से बात करना आसान होता है।

नीचे मौखिक संप्रेषण को प्रभावी बनाने के लिए कुछ सुझाव दिए गए हैः–

- पढ़कर और सुनकर भाषा को सुधारिए।
- बोलने के ढंग, शैली व उच्चारण पर कार्य कीजिए।
- पहले सोचिए फिर बोलिए।
- ज्यादा जल्दी व ज़ोर से न बोलिए।
- दूसरी संस्कृति के अतिसंवेदनशील शब्दों, चिन्हों व सन्दर्भों को सीखिए।

अपनी शारीरिक चेष्टाओं (बॉडी लैंग्वेज) को बेहतर बनाने के लिए याद रखना चाहिए कि–

- विशेषकर संस्कृति, लिंग व प्राधिकार के सन्दर्भ में निश्चित दूरी बनाए रखें।
- तभी स्पर्श करें जब आवश्यक हो।
- साक्षात्कार के समय आंखों से सम्पर्क बनाए रखें, यदि संचार, संस्कृति को लेकर हो रहा हो तो सावधानी बरतें।
- आत्मविश्वासी तथा प्रस्तुति योग्य दिखें।

मौखिक और अमौखिक संप्रेषण दोनों शक्तिशाली माध्यम हैं। अगर सही ढंग से एवं सावधानी से प्रभावी संप्रेषण का प्रयोग किया जाए तो उससे बहुत जल्दी सन्देश दिया जा सकता है। विज्ञापनदाता प्रभावी संप्रेषण का प्रयोग अपनी वस्तुओं को बेचने के लिए करते हैं। क्या आपको ध्यान में है किस प्रकार विज्ञापनदाता जानी–पहचानी हस्तियों, दृष्टि–चित्रों, शब्दों व लिखित शब्दों और संगीत का प्रयोग करते हैं, ताकि अपना सामान खरीदने के लिए जैसे गाड़ी, साबुन, मोटरसाइकिल या कपड़े खरीदने के लिए हमें प्रभावित कर सके। क्या आप ऐसे ही कुछ जाने–माने विज्ञापनों के गीत याद कर सकते हैं जैसे 'ठण्डा मतलब कोका कोला, 'दाग अच्छे हैं, 'ढूंढ़ते रह जाओगे। क्या ऐसे ही कुछ ओर पदबंध आप याद कर सकते हैं?

संप्रेषण का अर्थ ही है पूरे देश में एक–दूसरे में सूचना बांटना। जबकि अमौखिक संप्रेषण से जुड़ा अर्थ हर संस्कृति में अलग होता है। ऐसा कहा गया है कि बोलने वाली भाषा हमारे संप्रेषण का 7 से 35 प्रतिशत हिस्सा होती है। हमारे संप्रेषण का अधिकतर हिस्सा अमौखिक ही होता है, इसलिए जब मौखिक भाषा स्पष्ट रूप से अर्थ नहीं समझा पाती तो अधिक जानकारी के लिए हम अमौखिक संकेतों को खोजते हैं।

पाठगत प्रश्न 14.4 और 14.5

1. निम्नलिखित कथन 'सही' है या 'गलत':–

    क. हमारे संप्रेषण का अधिकतम हिस्सा अमौखिक संप्रेषण से होता है। सही/गलत

    ख. लोगों में सूचना ग्रहण करने की असीमित क्षमता होती है। सही/गलत

    ग. भाषा के प्रयोग पर उम्र, लिंग व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रभाव होता है। सही/गलत

    घ. संप्रेषण की सामग्री भेजने वाले तथा प्राप्तकर्त्ता, दोनों के बीच आपसी समझ होनी चाहिए। सही/गलत

    च. प्रभावी संप्रेषण तेज़ बोलने से हासिल किया जा सकता है। सही/गलत

2. प्रभावी संप्रेषण की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

14.6 भारतीय सन्दर्भ में अमौखिक संप्रेषण

किसी भी संस्कृति के अमौखिक संप्रेषण को समझना बहुत जरुरी है। विशेषकर तब जब उसका प्रयोग रोज़ाना के जीवन में होता हो। कुछ अमौखिक संप्रेषण दूसरों से हमारे रिश्तों की जानकारी देते हैं, जैसे पसन्द आना, उम्र, लिंग, प्रतिष्ठा आदि को समझना, और यह हमारी भावनाओं को व्यक्त करने में भी सहायक होते हैं। भारतीय सन्दर्भ में कुछ अमौखिक संकेत स्पष्ट हैं।

आइए शारीरिक चेष्टाओं (बॉडी लैंग्वेज) और गति बोध या काईनैसिक्स को समझ लें। भारतीय संस्कृति में एक युगल को सार्वजानिक स्थानों या परिवार के बीच में प्रेम या अंतरंग चेष्टाएं दिखाना अपेक्षित नहीं होता। एक दूसरे का हाथ पकड़ना या किसी अन्य पुरुष/महिला की ओर देखना भी गलत माना जाता है। किसी दूसरी संस्कृति की तरह भारत की संस्कृति में भी भिन्न प्रकार के अंग–संकेत और हाथों की गतियाँ होती हैं। भारत में जब आप अपनी कलाई पर अपना हाथ रखते हैं तो यह पारम्परिक हिन्दू स्त्री के कंगन या चूड़ी के प्रयोग की ओर संकेत करता है। अगर यही पुरुष करे तो उसका अर्थ उसके पुरुषार्थ पर प्रश्नचिन्ह या लड़ाई के लिए उकसाना होता है।

पुरुषों का पुरुषों से व महिलाओं का महिलाओं से हाथ मिलाना बहुत आम बात है, लेकिन पुरुषों और महिलाओं के मध्य हाथ मिलाना सामान्यतः परिहार्य है। दिल्ली, मुम्बई जैसे शहरों में व्यवसायिक क्षेत्र में पुरुषों व महिलाओं के बीच हाथ मिलाना आम माना जाता है। अतः अमौखिक संप्रेषण का निर्धारण प्रसंगवश होता है।

अमौखिक संप्रेषण में सामाजिक घटकः भारतीयों के पास अत्यन्त शक्तिशाली दूरगामी सूची होती है, जो कुछ सांस्कृतिक घटकों को चिनहित करती है जैसें, पदानुक्रम, अधिकार और उम्र

(वरिष्ठ व्यक्ति) जो संप्रेषण में निश्चित भूमिका निभाते हैं। दो व्यक्तियों में दूरी बनाए रखने का निर्धारण अन्तःव्यक्तिक सम्बन्ध, अधिकारी की स्थिति, उम्र और लिंग करते हैं। एक प्रतिष्ठित व्यक्ति किसी को भी सीधा देख सकता है, लेकिन एक कम सामाजिक स्थिति का व्यक्ति वरिष्ठ व्यक्ति के सामने हमेशा आँखें झुकाकर तथा निश्चित दूरी बनाकर ही खड़ा होता है। उदाहरण– मालिक–नौकर, पिता–पुत्र, पुत्रवधु और पति के परिवार का कोई बड़ा व्यक्ति। महिलांए अधिकतर अपने पति के परिवार के किसी पुरुष से आंखो से सम्पर्क नहीं बनाती। जो महिलाएँ रुढ़िवादी और पारम्परिक पृष्ठभूमि से होती है वह घूघंट से अपना सिर भी ढक कर रखती है।

भारतीय अपनी व्यक्तिगत दूरी एक से डेढ़ मीटर तक की मानक दूरी को बहुत महत्व देते हैं। यद्यपि परिवार वालों तथा करीबी दोस्तों के बीच यह दूरी थोडी कम होती है। परिवार वालों तथा करीबी दोस्तों के बीच सार्वजानिक स्नेह, हाथ पकड़ना, गले लगाना बहुत आम है। जब भी कुछ लोग किसी परिवार या दोस्त के घर जाते हैं तो हर व्यक्ति सबसे नमस्कार करके आता है। भारतीय युवा अधिकतर अपने से बड़ी उम्र के लोगों के झुक कर पैर छू कर उनका अभिनन्दन करते और विदा लेते हैं।

पाठगत प्रश्न 14.6

1. भारतीय सन्दर्भ में अमौखिक संप्रेषण में संस्कृति की भूमिका समझाइए।

14.7 संप्रेषण माध्यमों की भूमिका और प्रभाव

दर्शकों तक सूचना, विचार एवं मत पहुंचाने का तकनीकी साधन संप्रेषण माध्यम है। हम उस समाज में रहते हैं जहां सूचना व संप्रेषण हमें हमारे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों जैसे कार्य, स्वास्थ्य की देखरेख, मनोरंजन, शिक्षा, यात्रा करने एवं व्यक्तिगत सम्बन्धों आदि की उन्नति में हमारी सहायता करता है। हम रोज़ उठकर टी.वी, समाचार–पत्र व इंटरनेट पर समाचार देखते एवं पढ़ते हैं। हम विज्ञापनों को इतना देखते हैं कि बाज़ार से कुछ भी खरीदने के लिए वे हमें प्रभावित करते है। बच्चे और किशोर फैशन, आदर्श शारीरिक रूप, सौंदर्य की आदर्श प्रतिमा, शहरी जीवन–शैली आदि की संप्रेषण माध्यमों की सूचनाओं से अत्याधिक प्रभावित होते हैं।

सकारात्मक प्रभावः हमारे जीवन को शिक्षित एवं समृद्ध करने में संप्रेषण माध्यम एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह हमें शैक्षिक सूचनांए प्रदान करते हैं एवं अकादमिक कार्य निष्पादन को भी सुधारते है। यह सूचना एवं समाचार; (धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, मनोरंजन और पर्यावरण सम्बन्धी) एकत्रित कर जनता तक पहुँचाते हैं। समाचार माध्यमों का प्रयोग हितकारी उद्देश्यों, जैसे साक्षरता को बढ़ावा देने या चिकित्सीय उन्नति के लाभ (टीकाकरण, पोलियो, बच्चे

एवं मां के स्वास्थ्य की देखरेख एवं एडस) के लिए भी किया जा सकता है। यह सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को संचरित करता है। यह जनता तक सरकारी नीतियों, लेन–देन तथा नवीनतम कार्यक्रमों की जानकारी पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संप्रेषण माध्यम लोगों को संगठित कर सामाजिक एकता लाने में सहायक होता है। जन संप्रेषण माध्यम समाचार–पत्रों, रेडियो, टेलिवीजन तथा इंटरनेट द्वारा सम्पर्क बनाता है।

नकारात्मक प्रभावः व्यक्ति व समाज दोनों पर संप्रेषण माध्यमों के नकारात्मक प्रभाव भी पड़ते हैं। मीडिया का दुरुपयोग गलत सूचना एवं समाचार फैलाने के लिए भी किया जा सकता है, जिससे सम्प्रदायों के बीच ईर्ष्या और घृणा पैदा होती है। अफवाहों व दुष्प्रचार द्वारा झूठी सूचना फैलाना एक संगठित प्रयास होता है। कभी–कभी संप्रेषण माध्यम किसी की भी एकांतता का आदर नहीं करता और किसी भी प्रतिष्ठित या साधारण व्यक्ति की निजी व गोपनीय जानकारी को प्रकाशित कर देता है। संप्रेषण माध्यमों द्वारा अश्लील सामग्री को फैलाने से बच्चों व युवाओं पर गलत प्रभाव पड़ता है।

यह समझना बहुत जरुरी है कि संप्रेषण माध्यम समाज में महत्वपूर्ण कार्यों से सेवा करता है। अतः इसे अपने कुछ दायित्वों का निर्वाह करना चाहिए। मीडिया को वहाँ अपने नैतिक गुणों को बनाए रखना जरुरी है ताकि जनता तक वह सही व स्पष्ट जानकारी पहुँचाए। मीडिया को भारत के बहुवचनीय स्वभाव को ही झलकाना चाहिए और देश के हर नागरिक को आव़ाज प्रदान करनी चाहिए।

आपने क्या सीखा

- संप्रेषण की प्रकिया लोगों तथा परिवेश के साथ होने वाली अन्तःक्रिया है।
- संप्रेषण द्वि–पक्षीय प्रकिया है जिसमें सन्देश होता हैं, जो स्वभाव में बदलाव लाता है। साथ ही साथ जिसमें सन्देश को भेजने व समझने की सहजता होती है।
- मौखिक संप्रेषण हमें शब्दों, बोलने व लिखने के माध्यम से लोगों के बीच अर्थपूर्ण अन्तःक्रिया के साथ–साथ जानकारी व दिशा प्रदान करता है।
- अमौखिक संप्रेषण के अन्तर्गत आंखों का सम्पर्क, चेहरे के हाव–भाव, शारीरिक चेष्टाओं का प्रयोग व दूरी बनाए रखना शामिल है।
- भारतीय संदर्भ में अमौखिक संप्रेषण के अनुपम रूप हैं।
- मीडिया के माध्यम से मनुष्य के स्वभाव पर संप्रेषण के सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं।

पांठात प्रश्न

1. उपयुक्त उदाहरणों की सहायता से संप्रेषण को परिभाषित कीजिए। संप्रेषण के पांच तत्त्वों की चर्चा कीजिए।
2. मौखिक और अमौखिक संप्रेषण किस प्रकार हमारे रोजमर्रा के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, चर्चा करें।
3. प्रभावी संप्रेषण की विभिन्न विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।
4. उपयुक्त उदाहरणों की सहायता से भारतीय सन्दर्भ में अमौखिक संप्रेषण के अद्वितीय प्रतिमानों का वर्णन कीजिए।
5. समाज पर संप्रेषण माध्यमों की भूमिका एवं प्रभाव का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

14.1 और 14.2

1. क. सही

   ख. सही

   ग. गलत

   घ. गलत

2. (i) द्विपक्षीय प्रक्रिया (ii) सन्देश आवश्यकता (iii) समझ की समानता (iv) दूसरों के व्यवहार में बदलाव (v) सूचना देने की विधि।

14.3

क. मौखिक संचार

ख. अमौखिक संचार

ग. गति बोध (काईनैसिस्क), एकटक देखना, निकट आना, स्पर्श करना

घ. छूना

14.4 और 14.5

1. क. सही

   ख. गलत

ग. सही

घ. गलत

2. (i) समान सन्दर्भ, (ii) समान रुचि, (iii) समान भाषा, (iv) समान परिवेश

14.6

सन्दर्भ खण्ड 14.6

पाठांत प्रश्नों के संकेत

1. खण्ड 14.1 और 14.2 देखें।
2. खण्ड 14.3 देखें।
3. खण्ड 14.4 देखें।
4. खण्ड 14.6 देखें।
5. खण्ड 14.7 देखें।